# DEEKSHABHOOMI

Deekshabhoomi is regarded as one of the most revered monuments of Buddhism. It is at this very place, the architect of the Indian Constitution, Dr. Babasaheb Ambedkar, embraced Buddhism with nearly 4 lakhs of his followers on 14 October 1956.

Deekshabhoomi is spread across 22 acres of land in the heart of Nagpur. Deekshabhoomi Stupa is the largest hollow stupa among all Buddhist stupas in India. The diameter is 36 meters and has a height of 22 meters. Height from ground level is 30 meters. Based on the theme of Ashok Chakra, the stupa rests on 24 pillars resembling 24 spokes. The stupa dome is constructed with concrete blocks and stands on a self-supporting concrete umbrella as a capstone. The dome is surrounded by a four meter wide veranda. Beneath the dome there is a 64 x 64 meter Prayer hall (Vihara). At the center of stupa, Relics of Dr. Babasaheb Ambedkar and an idol of Buddha is placed.

The stupa has four doors opening in four directions. The doors lead to the large gates, which are replicas of Sanchi gate with Ashok Chakras, and statues of horses, elephants, and lions. Around the stupa, there is a garden and statues of Dr. Babasaheb Ambedkar and Gautam Buddha on the south-east side of the stupa. On the east side of the stupa are built, a monastery (Bhikkhu Niwas) and two pillars depicting 22 vows and preamble of Indian constitution. The historical Bodhi Tree (Bodhi vriksha) is also planted alongside.

The 'Bodhi Vriksha' at Deekshabhoomi of Bodh Gaya is a sacred fig (Pipal) tree. This Bodhi Tree is a sapling of the same Bodhi tree under which Gautam Buddha attained enlightenment. This sapling of the Bodhi Tree was brought from Anuradhapuram in Sri Lanka. The Bodhi tree at Anuradhapuram is said to be planted from the sapling of original Bodhi Tree by Sanghmitra, the daughter of Emperor Ashoka.

Dr. Babasaheb Ambedkar selected Nagpur for his conversion ceremony, as he explained in his speech that Nagpur was the homeland of “Nag” people who embraced Buddhism, supported it with great efforts in its early period and propagated it throughout India.

The emperor Ashoka the Great embraced Buddhism on the Ashwin Shukla Vijaya Dashmi, then known as Ashok Vijaya Dashmi. Dr. Babasaheb Ambedkar also chose this day for embracing Buddhism. The year 1956 also coincided with 2,550th Birth Anniversary of Bhagavan Gautam Buddha.

On Ashoka Vijaya Dashmi, 14 October 1956, Ambedkar and his wife took the oath of three Jewels “Trisaran” and five Precepts 'Panchsheel' from the Burmese monk Mahasthavir Chandramani from Kushinagar. Ambedkar then gave the oath of three Jewels, five precepts, and 22 Vows 'Pratigya' to his thousands of followers. It was after this day, Nagpur became the birthplace of Neo Buddhist movement.

Deekshabhoomi has gained the status of a pilgrimage center of Buddhism in India. On the Ashoka Vijaya Dashmi day, called as Dhamma Chakra Pravartan Din, millions of pilgrims visit Deekshabhoomi.

The Government of Maharashtra has declared Deekshabhoomi a status of 'Grade-A' pilgrimage center. Millions of people, architects and researchers visit Deekshabhoomi every year.

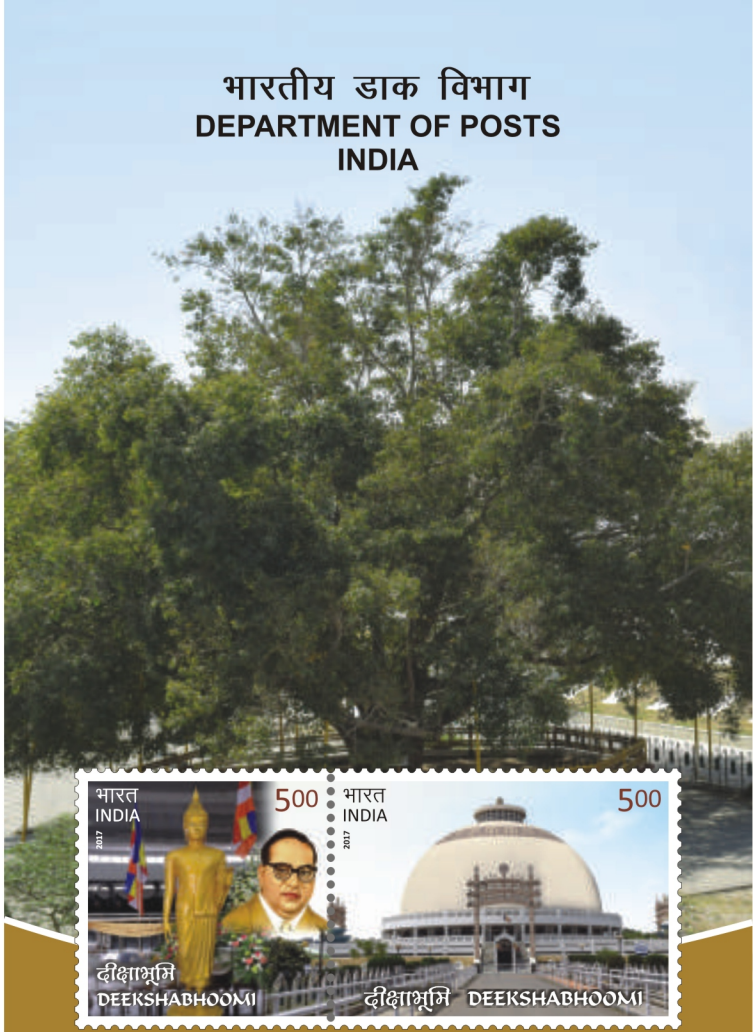
Deekshabhoomi stupa was inaugurated by the then President of India Honorable Shri. K. R. Narayanan on 18th December 2001.

Department of Posts is pleased to release a set of two Commemorative Postage Stamps on Deekshabhoomi.

**Credits:-**

| | | |
|---|---|---|
| Text | : | Based on the material received from proponent |
| Stamp / FDC/Brochure Cancellation Cachet | : | Smt. Nenu Gupta |

भारतीय डाक विभाग
**DEPARTMENT OF POSTS**
**INDIA**




दीक्षाभूमि DEEKSHABHOOMI

# विवरणिका BROCHURE

# दीक्षाभूमि

दीक्षाभूमि बौद्ध धर्म के सबसे प्रतिष्ठित स्मारकों में से एक है। इसी स्थान पर भारतीय संविधान के निर्माता, डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने 14 अक्तूबर, 1956 को अपने लगभग 4 लाख अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म को अपनाया था।

दीक्षाभूमि नागपुर के केन्द्र में 22 एकड़ भूमि में फैली हुई है। दीक्षाभूमि स्तूप भारत के सभी बौद्ध स्तूपों में सबसे बड़ा खोखला स्तूप है। इस स्तूप का व्यास 36 मीटर तथा इसकी ऊँचाई 22 मीटर है। भूतल से इसकी ऊँचाई 30 मीटर है। अशोक चक्र के विषय पर आधारित यह स्तूप 24 खंभों पर टिका हुआ है, जो 24 आरों के समान हैं। स्तूप के गुम्बद को सीमेंट की इंटों से बनाया गया है तथा इसे कैपस्टोन के रूप में कंक्रीट के स्वावलंबी छाते पर स्थापित किया गया है। यह गुंबद चार मीटर चौड़े बरामदे से घिरा हुआ है। इस गुंबद के नीचे एक 64 x 64 मीटर का प्रार्थना हाल (विहार) है। स्तूप के मध्य में डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के स्मृति चिह्न तथा बुद्ध की मूर्ति रखी गई है।

इस स्तूप के चार दरवाजे हैं, जो चार दिशाओं में खुलते हैं। ये दरवाजे बड़े द्वार तक पहुंचते हैं, जो सांची के द्वार की प्रतिकृति हैं, जिस पर अशोक चक्र, अश्वों, हाथियों तथा शेरों की मूर्तियां हैं। स्तूप के चारों तरफ एक उद्यान है तथा स्तूप के दक्षिण-पूर्व में डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर तथा गौतम बुद्ध की मूर्तियां हैं। स्तूप के पूर्व की तरफ एक मठ (भिक्खु निवास) तथा दो खंभों का निर्माण कराया गया है, इन खंभों पर 22 प्रतिज्ञाओं तथा भारतीय संविधान की प्रस्तावना को प्रदर्शित किया गया है। इसके समीप ही ऐतिहासिक बोधि वृक्ष भी लगाया गया है।

बोध गया की दीक्षाभूमि परिसर में स्थित 'बोधि वृक्ष' एक पवित्र 'पीपल' का वृक्ष है। यह बोधि वृक्ष उसी बोधि वृक्ष का एक पौधा है, जिसके नीचे गौतमबुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। बोधि वृक्ष का यह पौधा श्रीलंका के अनुराधापुरम से लाया गया था। अनुराधापुरम के बोधि वृक्ष के बारे में यह कहा जाता है कि यह पौधा सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा द्वारा मूल बोधि वृक्ष से लेकर लगाया गया था।

डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने अपने धर्मान्तरण समारोह के लिए नागपुर का चयन किया, जैसाकि उन्होंने अपने भाषण में बताया था कि नागपुर 'नाग' लोगों की गृह-भूमि थी, जिन्होंने बौद्ध धर्म अपनाया तथा इसके प्रारंभिक काल में अथक प्रयासों से इसका समर्थन किया और समूचे देश में इसका प्रचार-प्रसार किया।

सम्राट अशोक महान ने 'आश्विन शुक्ल विजय दशमी' के दिन बौद्ध धर्म को अपनाया, जो उस समय अशोक विजय दशमी के नाम से जानी जाती थी। डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने भी बौद्ध धर्म अपनाने के लिए इसी दिन का चयन किया। वर्ष 1956, भगवान गौतम बुद्ध की 2550 वीं जन्म जयंती का भी वर्ष था।

14 अक्तूबर, 1956 को अशोक विजय दशमी पर डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर और उनकी पत्नी ने कुशीनगर से आए बर्मा के भिक्षु महास्थविर चंद्रमणि से तीन रत्न ''त्रिसरन'' तथा पाँच नियम ''पंचशील'' की शपथ ली। इसके उपरांत उन्होंने अपने हजारों अनुयायियों को तीन रत्न, पाँच नियम तथा 22 प्रतिज्ञाओं की शपथ दिलाई। इस दिन के बाद, नागपुर नव बौद्ध आंदोलन की जन्मस्थली बन गया।

दीक्षाभूमि को भारत में बौद्ध धर्म के तीर्थ स्थान का दर्जा प्राप्त है। अशोक विजय दशमी का दिन, जिसे धम्म चक्र प्रवर्तन दिन कहा जाता है, के दिवस पर लाखों तीर्थयात्री दीक्षाभूमि के दर्शनार्थ पधारते हैं।

महाराष्ट्र सरकार ने दीक्षाभूमि को 'ए श्रेणी' के तीर्थस्थल के रूप में घोषित किया है। यहां लाखों लोग, वास्तुविद तथा अनुसंधानकर्ता प्रत्येक वर्ष दीक्षाभूमि के दर्शनार्थ पहुंचते हैं।

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री के.आर. नारायणन ने 18 दिसम्बर, 2001 को दीक्षाभूमि स्तूप का उद्घाटन किया था।

डाक विभाग दीक्षाभूमि पर दो स्मारक डाक टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

**आभार:-**

| | | |
|---|---|---|
| मूलपाठ | : | प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित |
| डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण | : | श्रीमती नीनू गुप्ता |


भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

| | | |
|---|---|---|
| मूल्यवर्ग<br>Denomination | :<br>: | 500 पैसा, 500 पैसा<br>500 p, 500 p |
| मुद्रित डाक टिकटें<br>Stamps Printed | :<br>: | 3.10 लाख प्रत्येक<br>3.10 lakh each |
| मुद्रण प्रक्रिया<br>Printing Process | :<br>: | वेट ऑफसेट<br>Wet Offset |
| मुद्रक<br>Printer | :<br>: | प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद<br>Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00